[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3280

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

पर्यावरण प्रबन्धन एवं समाज

निर्मला शाह
शास. कन्या स्ना.महा. उज्जैन

मानव और पर्यावरण का निकट का सम्बन्ध है। पर्यावरण मानव को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। स्वावलम्बी विकास की अवधारणा पर्यावरण एवं विकास नीतियों के एकीकृत नजरिये पर आधारित है जिनका अभिप्राय किसी पारिस्थितिक क्षेत्र से अधिकाधिक आर्थिक लाभ लेना एवं पर्यावरण के संकट एवं जोखिम को न्यूनतम करना है। इसमें अन्तर्निहित है, वर्तमान की आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं को भविष्य की क्षमताओं से समझौता किये बिना पूरा करना। इसको प्राप्त करने के लिये हमें विकास का पारिस्थितिक समन्वय करना होगा जिसमें हमें अपनी प्राथमिकताओं का पुनर्निन्यास करना चाहिये तथा एक आयामी प्रतिमान छोड़ देना चाहिये जो कि वृद्धि को कतिपय सीमित दृष्टिकोंण से देखता है, जिसमें व्यक्ति के बजाय वस्तुओं को उच्चतर स्थान दिया जाता है जिसने हमारे सुख की बजाय हमारी आवश्यकताओं में वृद्धि कर दी है।

अतः पर्यावरण प्रबंधन की आवश्यकता आज की प्राथमिक आवश्यकता है जिसके द्वारा न केवल संसाधनों का युक्ति संगत उपयोग हो सके, अपितु क्षेत्रीय आवश्यकताओं को पूर्ण करने एवं पर्यावरण की क्रियाओं में सामंजस्य स्थापित किया जा सके और आवश्यकता होने पर उपयोग सीमित किया जा सके। पर्यावरण प्रबंधन का मूल उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों का युक्तियक्त उपयोग, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा, आर्थिक मूल्यों को नई दिशा प्रदान करना तथा शुद्ध पर्यावरण प्रदान करना है। यह कार्य एकाकी अथवा एक संस्था का न होकर सामूहिक रूप से संभव हैं इसमें प्रशासन सामाजिक संस्थाएँ और प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका मुख्य है। यदि हम पर्यावरण की शुद्धि चाहते हैं तथा भविष्य में उसे स्वच्छ एवं स्वास्थ्यवर्धक रखना चाहते हैं, तो हमें पर्यावरण प्रबंधन पर समुचित ध्यान देना होगा।

विश्व विकास रिपोर्ट 1992 में पर्यावरण प्रबंधन एवं विकास के लिये दो आधार बताए गए हैंः–

- ऐसी नीति का निर्धारण जो उत्पादन एवं पर्यावरण में धनात्मक सह सम्बन्ध स्थापित कर अनुचित और असफल नीतियों में सुधार, संसाधन और तकनीकि में संतुलन और लाभदायक आय से विकास का मार्ग प्रशस्त हो।
- लक्ष्य निर्धारण नीति जो पर्यावरण के विशिष्ट पक्षों से सम्बन्धित समस्याओं के मूल्यांकन में पर्यावरणीय आधारों पर प्रबंधन का आधार बन सके।

पर्यावरण–प्रबन्धन को कारगर बनाने के लिये नियोजित तरीके से प्राथमिकताओं को तय कर खर्च योजना बनायी जाती है ताकि समय और साधनों के दुरूपयोग को कम किया जा सके और प्रगतिशील टिकाऊ समाज के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। इस प्रकार नियोजन आधारित कार्यविधि से जहाँ वर्तमान संकटों से उबरने में मदद मिलती है, वहीं विकास की गति बनी रहती है। इस लक्ष्य को मूर्तरूप प्रदान करने में विकसित एवं विकासशील देशों का अपेक्षित सहयोग जरूरी है। संकट की विकट स्थिति उन क्षेत्रों में अधिक हैं जहाँ सामाजिक, आर्थिक विकास और पर्यावरण में संघर्ष पैदा हो गाय है। इसमें पारिस्थितिकी की समस्या जटिल हो गई है। इस संघर्ष से छुटकारा या इसको यथा सम्भव कम करना पर्यावरण प्रबंधन की सामाजिक आवश्यकता है। अपने आर्थिक क्रिया कलापों में लिप्त मानव समाज एक विशिष्ट जीवन पद्धति का अभ्यस्त हो गया है। प्रकृति के समायोजन करने में उसकी तकनीकि उपलब्धि एवं व्यावहारिक मान्यताएँ अवरोधक हैं। फलस्वरूप पारिस्थितिक संतुलन से बढ़ती कठिनाईयाँ यह सोचने के लिये बाध्य करती हैं कि पर्यावरण को सुधारने एवं संरक्षित रखने का उपाय ढूँढ़ा जाए।

यह सत्य है कि विकास की एक सीमा होती है तथा अतिरेक संकट का कारण। जनसंख्या वृद्धि एक नैसर्गिक प्रक्रिया है किन्तु जब जनसंख्या विस्फोट की स्थिति आ जाती है, तो जनसंख्या वृद्धि एक कठिन समस्या बन जाती है। जनसंख्या वृद्धि के साथ भोजन के उत्पादन में भी वृद्धि आवश्यक हो जाती है। लेकिन जिस गति से जनसंख्या बढ़ती है, भोजन का उत्पादन नहीं बढ़ पाता। औद्योगिक उत्पादन करने वाला मानव अन्य क्षेत्रों से आयात करके पूरा करता हैं लेकिन जब कृषि प्रधान देश भी औद्योगिक विकास में संलग्न हो जाते हैं तो भोजन की समस्या उठ खड़ी होती है। फलतः समस्या समाधान के लिये गहन कृषि को बढ़ावा देना पड़ता है। इस प्रकार उन्नत कृषि से पर्यावरणीय संसाधनों जैसे– मृदा, जल आदि पर भार बढ़ता है। जिससे मानव प्रकृति का रिश्ता असंतुलित हो जाता है। मानव नित नई तकनीकों से प्रकृति के प्रकोपों को दबाता है, जैसे– कीटनाशकों का प्रयोग, कृत्रिम खाद, जल आदि से उत्पादकता में वृद्धि के प्रयोग करता है। यह प्रभाव अस्थायी होता है तथा प्रकृति के स्व नियामक स्वरूप में व्यवधान डालताहै। फलतः पर्यावरणीय समस्या का जन्म होता है, जिसके निदान हेतु पर्यावरण प्रबन्धन करना पड़ता है। प्रकृति के साथ सद्व्यवहार ही पर्यावरण प्रबंधन का मूल उद्देश्य है।

पर्यावरण–प्रबन्धन के प्रति समन्वित दृष्टिकोंण अपनाया जाना चाहिये, क्योंकि प्रकृति के तत्व अति जटिल संवेदनशील होते हैं। पर्यावरण प्रबंधन मात्र वैज्ञानिक या इंजीनियर के वश का नहीं है क्योंकि पर्यावरण असंतुलन से उत्पन्न समस्याएँ अति व्यापक हैं, जिनके केन्द्र में मनुष्य अहम् भूमिका निभाता है। व्यापक अर्थ में सामाजिक पर्यावरण का प्रबन्धन भी इसके अन्तर्गत आता है। समाज में भेदभाव, तनाव द्वेष, युद्ध उन्माद आदि क्रियाओं का सम्बन्ध किसी न किसी तरह से पर्यावरण से है। अतः पर्यावरण प्रबन्धन में तकनीकि और वैज्ञानिक पक्ष एक ओर है, तो मानवीय पक्ष दूसरी ओ। पर्यावरण–प्रबन्धन का लक्ष्य मनुष्य के लिए इसलिए भी है कि पृथ्वी ही उसका एकमात्र निवास स्थान है। अतः मानव को आधार मानकर ही पर्यावरण–प्रबन्धन की रणनीति स्वीकारनी चाहिए।

पर्यावरण नीति से सम्बन्धित प्रमुख बिन्दु निम्नलिखित हैं:–

1. पर्यावरण के विविध घटकों को प्रदूषित होने से बचाना।
2. मानव की पर्यावरण–प्रदूषण से रक्षा।
3. विलुप्तशील प्रजातियों का संरक्षण।
4. विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं में पर्यावरण–प्रबन्ध हेतु समन्वय बनाना।
5. विकास योजनाओं का पर्यावरणीय प्रभाव के दृष्टिकोंण से विश्लेषण करना।
6. पर्यावरण सम्बन्धी राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय नीति–निर्धारण में सहयोग करना।
7. पर्यावरण की गुणवत्ता बनाए रखने हेतु निरन्तर पुनरीक्षण हेतु व्यवस्था करना।
8. पर्यावरण–संरक्षण एवं प्रबन्धन हेतु पर्याप्त मानवीय एवं संस्थागत साधनों को जुटाना।
9. पर्यावरण–चेतना जाग्रत करना एवं पर्यावरण शिक्षा का विस्तार करना।
10. प्रबंधन हेतु किये गये उपायोग के परिणामों की सतत् जाँच एवं सुरक्षा
11. पर्यावरण नियोजन हेतु प्रारूप तैयार करना।
12. पर्यावरण के विविध पक्षों पर शोध कार्यों को बढ़ाना।

वास्तव में पर्यावरण–प्रबन्धन नीति वर्तमान युग की महती आवश्यकता है। अतः इस पर समुचित ध्यान देना आवश्यक है।